Module -3

# बिहार के स्कूल में सामुदायिक भागीदारी को शामिल करने में स्कूल प्रधानों की भूमिका

● कुमारी गुड्डी ● आदित्य नाथ ठाकुर

एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण उपलब्ध होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे आधारभूत ढांचे एवं उपयुक्त संसाधन उपलब्ध रहते हैं। ये सब प्राप्त करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए। साथ ही विभिन्न संस्थानों के बीच तथा शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर परस्पर सहज 'जुड़ाव और समन्वय' आवश्यक है।

*"A good education institution is one in which every student feels welcomed and cared for, where a safe and stimulating learning environment exists, where a wide range of learning experiences are offered, and where good physical infrastructure and appropriate resources conducive to learning are available to all students. Attaining these qualities must be the goal of every educational institution., However, at the same time, there must also be seamless integration and coordination across institutions and across all stages of education".*

# बिहार के स्कूल में सामुदायिक भागीदारी को शामिल करने में स्कूल प्रधानों की भूमिका

सर्वप्रथम हम समुदाय शब्द को समझने का प्रयास करेंगे जिसे अंग्रेजी भाषा में community कहा जाता है। तो यह जानना बहुत आवश्यक हैं कि बिहार के विद्यालयों में समुदाय की भूमिका काफी अहम है। उनकी महत्ता की पहचान करवाने में प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की मान्यता है कि सामान्य शिक्षा के साथ साथ सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं की वास्तविक समझ विकसित करने तथा सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात करने के लिए विद्यालयों को स्थानीय समुदाय के संपर्क में लाना आवश्यक है। इससे छात्रों में दायित्व बोध, सहयोग की भावना तथा समाजसेवा की इच्छा विकसित की जा सकती है। किसी भी विद्यालय के प्रधानाध्यापक/शिक्षक अगर स्थानीय समुदाय से निकट सम्पर्क रखता है, वह आसानी से उन सांस्थितियों की खोज कर सकता है जो सामान्य ग्राम्य विकास या विद्यालय विकास से संबंधित हैं। समुदाय की सहभरागिता विद्यालय स्तर पर समावेशी शिक्षा को भी बढ़ावा देता है।

## उद्देश्य (Objectives):-

**इस माड्यूल के द्वारा, प्रधानाध्यापक कर पाएँगे;**

01. समुदाय की विद्यालय में सहभागिता की समझ बनेगी।
02. विभिन्न क्षेत्रों से समुदाय को विद्यालय से जोड़ने की समझ बनेगी।
03. बच्चों के सर्वांगीण विकास में समुदाय की सहभगिता की समझ बनेगी।

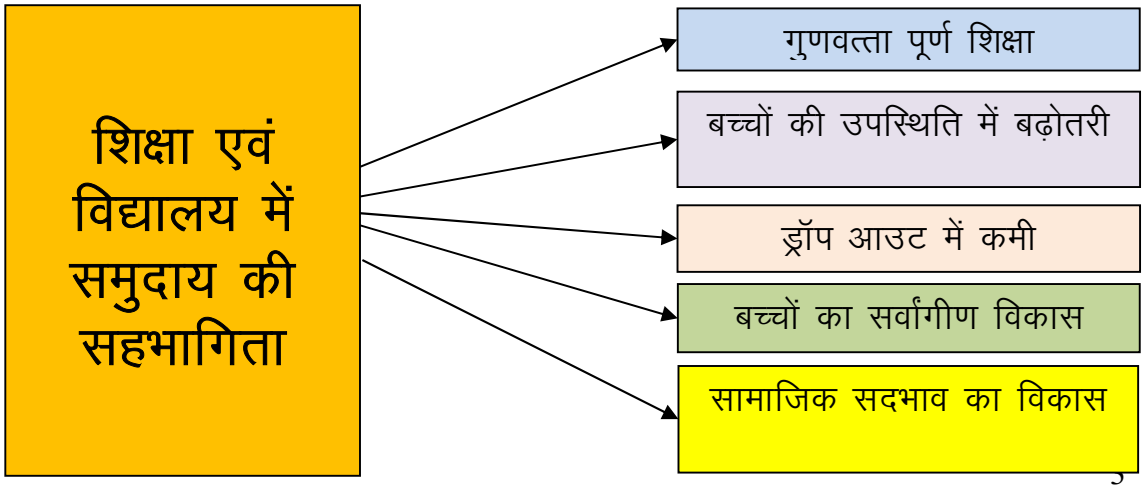

# समुदाय की सहभागिता

समुदाय की सहभागिता विद्यालय एवं शिक्षा में काफी महत्वपूर्ण है। विद्यालय में विभिन्न समुदायों से प्रायः इस संस्कृतियो के बालक/बालिका शिक्षा प्राप्त करने हेतु आते हैं और साथ–साथ रहकर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा शिक्षा ग्रहण करते हैं। उदाहरण के लिए एक सामाजिक अध्ययन के शिक्षक छात्रों के साथ बातचीत करने और जिले के सामने आने वाले मुद्दों को साझा करने के लिए स्कूल जिले से एक अतिथि वक्ता ला सकते हैं। वह छात्रों को स्कूल और समुदाय बंधन में बनाते हुए वास्तविक जीवन का अनुभव देता है।

इस तरह की रणनीति प्रधानाध्यापक द्वारा तैयार कर विद्यालय में उनकी सहभागिता ली जा सकती है।

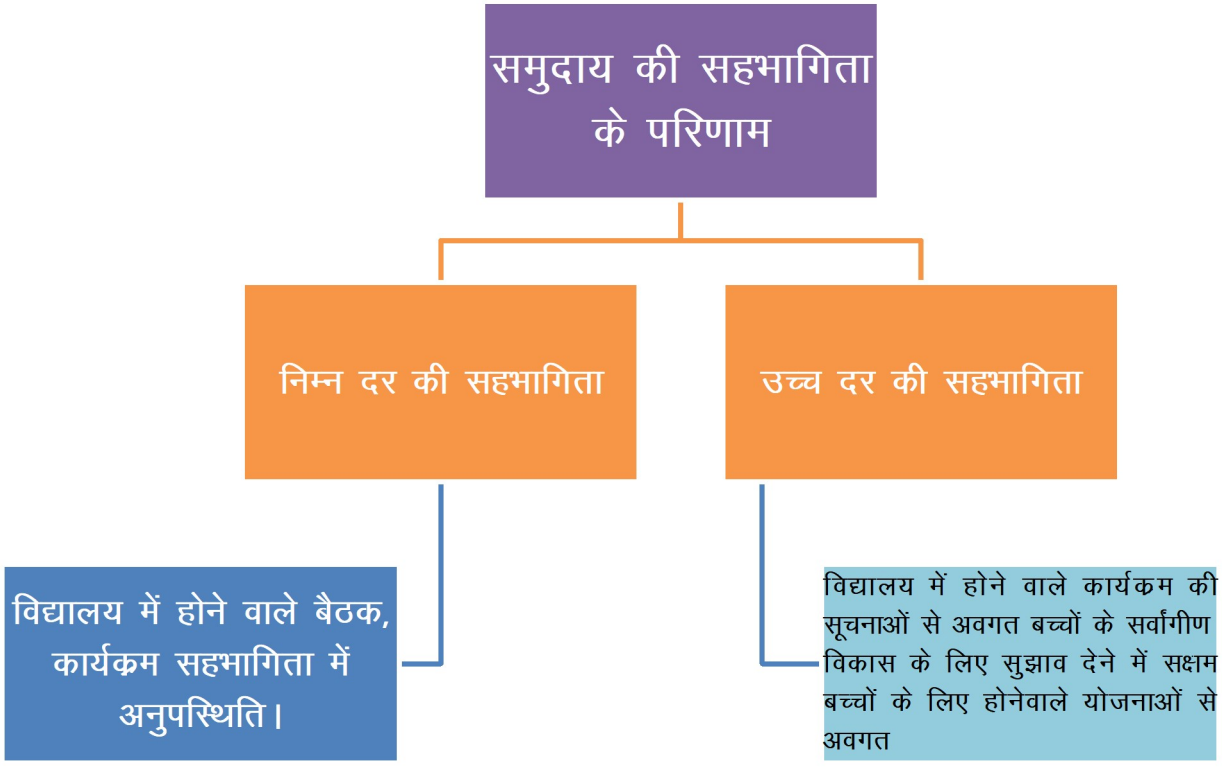


अगर शिक्षकों को समुदाय का साथ और बढ़ावा मिला है तो वे बच्चो को आगे बढ़ने के लिए हर संभव प्रयास तथा मंच प्रदान करने का कार्य करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में समुदायों का सहयोग प्रचीन काल से चला आ रहा है। आज और भविष्य में भी इसके बिना सहयोग के शिक्षा की उचित व्यवस्था करना संभव नहीं है। आज हमारी शिक्षा का

उद्देश्य बच्चों का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास करना है और समुदाय हमें इन सब उद्देश्य की प्राप्ति में काफी सहायता कर सकते हैं। अतः विद्यालय और समुदाय में सहयोग स्थापित करने में प्रधानाध्यापक की भूमिका काफी अहम है।

## WHO CAN ACTIVELY PARTICIPATE

**स्कूली शिक्षा के संदर्भ में, निम्न प्रकार से सहभागिता को हम वितरित कर सकते है :**

### शिक्षक / प्रधानाध्यापक / विद्यालय प्रशासन

1. प्रधानाध्यापक द्वारा समय–समय पर शिक्षकों एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक लेना।
2. पूरे महीने के कार्य की भावी योजना बनाना।
3. उत्साहवर्द्धन करना।

4. बच्चों की लगातार उपस्थिति पर कार्य।

## चुनौतियाँ :–

1. **जागरूकता की कमी एवं RTE 2009 एवं NEP 2020 के बारे में जानकारी का अभाव।**

## विद्यालय प्रबन्धन समिति

1. हर महीने की बैठक में शामिल होना
2. अपने स्थानीय भाषा एवं संस्कृति के बारे में अवगत कराना
3. बच्चों की उपस्थिति को बढ़ाने के लिए कार्य करना
4. विद्यालय संचालन सुचारू रूप से करवाने पर सहयोग करना
5. स्कूली शिक्षा में मजबूती प्रदान करने में सक्षम
6. विद्यालय में होने वाली गलत कार्यशैली का विरोध करने में सक्षम

## समुदाय की सहभागिता के सोपान

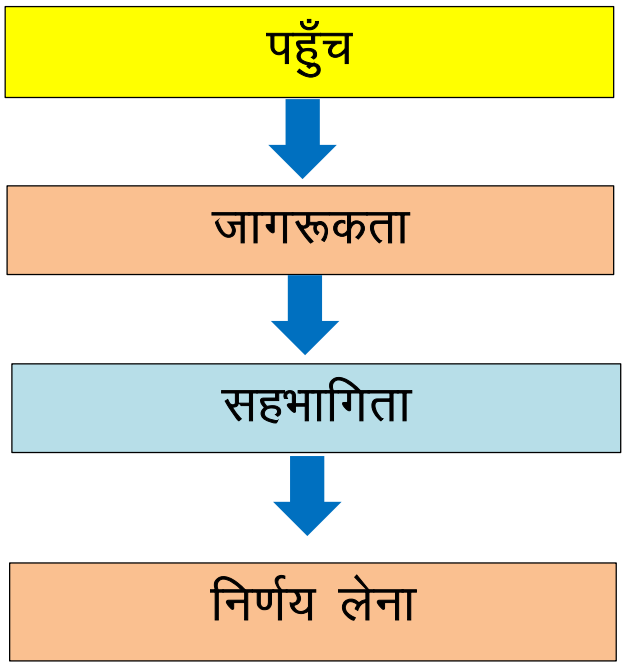

विद्यालय में समुदाय की उचित सहभागिता के लिए सरकार के द्वारा समय–समय पर उचित कदम उठाए गए हैं। सामुदायिक जुड़ाव पहल सार्वजनिक संस्थानों और सेवाओं के पोषण के लिए गहरी प्रतिबद्धता के साथ हमारे परिसर के आसपास मानवीय स्थितियों और परिवेश को आयाम प्रदान करता है।

***चुनौतियाँ***

विद्यालय प्रबंधन समिति के कार्यक्रम, बैठक में अनुपस्थिति, रोचकता की कमी, एवं कम पढ़ा लिखा होना।

## अभिभावक / समुदाय

1. बच्चों एवं शिक्षक के कार्यशैली के प्रति जागरूकता।
2. PTM में हर महीने शामिल होना।
3. अपने बच्चों की प्रतिभा को आगे लाना।
4. बच्चों की लगातार उपस्थिति पर नजर रखना।

***चुनौतियाँ***

1. माता–पिता का अनपढ़ होना।
2. बैठकों / PTM मे शामिल न होना।
3. बच्चों से बाल मजदूरी करवाना।

## ग्राम पंचायत

1. विद्यालय में होनेवाले मूलभूत सुविधाओं की जानकारी देना।
2. विद्यालय से जुड़ाव।
3. वित्तीय सहायता प्रदान करना।
4. ग्रामपंचायत से संपर्क स्थापित करने के सूत्र को साझा करना।
5. शिक्षा के साथ सामाजिक गतिविधियों पर पहल।
6. बालिका शिक्षा पर जोर।

## *चुनौतियाँ*

1. विद्यालय के कार्यों में अवांछित दखलअंदाजी
2. विद्यालय एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपने लाभ को ढूंढना।

# रोल मॉडल

ये ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जो सामाजिक प्रभाव रखते हुए अपने कार्यों के द्वारा अपनी एक अलग–पहचान बनाते हैं।

1. विद्यालय के हित में कार्य करना।
2. बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना।
3. विद्यालय में उपस्थिति दर बढ़ाना और dropout को विद्यालय लाना।
4. योजनाओं से बच्चों को लाभ पहुँचाना।

## *चुनौतियाँ*

इनके लगातार विद्यालय आगमन से कभी–कभी अवांछित बाधाएँ उत्पन्न होती है।

# योजनाओं/ कैरियर से संबंधित व्यक्ति

1. विद्यालय में छात्र/ छात्राओं को कैरियर से संबंधित बातें बताना।
2. योजनाओं/ Profession से संबंधित Basic बातें साझा करना।

## *चुनौतियाँ*

1. ग्राम पंचायत में संलग्न राजनीतिक गतिविधियाँ।
2. विद्यालय और ग्राम पंचायत में वार्त्ता एवं संपर्क की कमी।

# पूर्ववर्त्ती छात्र/ छात्राएँ

1. शिक्षा के महत्व के बारे में बच्चों को Motivate/ प्रेरित करना।
2. विभिन्न पदों के लिए आगे बढ़ अपने कैरियर में शामिल करने के लिए ज्ञान

देना।

*चुनौतियाँ*

विद्यालय से लगातार न जुड़े रहने एवं संपर्क की कमी।

## स्थानीय N.G.O (Non Government Organization)

1. विद्यालय के भीतर विभिन्न कार्यक्रमों को अमल में लाने की योजना बनाने में सक्रिय रूप से भाग लेना।
2. नेतृत्व कौशल में छात्र/छात्राओं को योगदान देना।
3. युवाओं की क्षमता का विकास करना।
4. अपने स्तर से विद्यालय में विषयवार शिक्षक उपलब्ध कराना।

## समुदाय को जागरूक करने में मार्ग में आनेवाली बाधाओं की सूची :

1. Communication Gap
2. Cultural Barrier
3. Low interest of SMC members
4. Lack of awareness among members about RTE 2009 and NEP 2020

**1- आपसी संपर्क का अभाव :–** विद्यालय प्रबंधन समिति एवं शिक्षकों के बीच एक दूसरे से संपर्क एवं आपसी वार्त्तालाप की कमी पाई जाती है। जिसके कारण कभी शिक्षक तो कभी SMC, बैठक की महत्ता को समझ नही पाते और बैठकों से अनुपस्थित होते हैं।

**2- सांस्कृतिक विभिन्नता एवं अवरोध :–** कभी–कभी सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण भी शिक्षक एवं समुदाय एक दूसरे को अपने विचार साझा नहीं कर पाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या और भी विकट है। किसी प्रतिष्ठित एवं ज्ञानी व्यक्ति के द्वारा बैठक में इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

**3- विद्यालय प्रबंधन समिति की उदासीनता:–** सरकारी विद्यालय के अभिभावक एवं SMC सदस्य Poor background होने के कारण बैठकों में अपने रोजगार एवं कार्य के कारण सम्मिलित नहीं हो पाते हैं। शिक्षक एवं

प्रधानाध्यापक लगातार उनसे संपर्क स्थापित कर उन्हें विद्यालय एवं बैठकों से जोड़े रख सकते हैं।

4- **RTE 2009 and NEP 2020 संदर्भ में जागरूकता की कमी** :– अपने रोजगार Poor background तथा कम पढ़े लिखे होने के कारण SMC सदस्य तथा अभिभावक RTE 2009 से अनभिज्ञ है। इसमें प्रधानाध्यापक मुख्य भूमिका अदाकर उन्हें उनकी ही भाषा में या जिस भी भाषा की समझते हैं Video showing तथा छोटे–छोटे informative clips के द्वारा उन्हें ज्ञान दे सकते हैं।

5- **PTM में अभिभावकों की अनुपस्थिति** :– अभिभावक गोष्ठी शिक्षक एवं अभिभावकों की उदासीनता के बीच विचार विमर्श आदान प्रदान करने का एक बहुत अच्छा माध्यम है। अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं अच्छी शिक्षा देने के लिए PTM के द्वारा अभिभावक अपने विचार शिक्षकों से साझा कर सकते हैं। प्रधानाध्यापक द्वारा PTM में अभिभावकों को लेकर छात्रों के हित कुछ ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

3. ऐसे क्षेत्र या website, company के बारे में जानकारी साझा करना जहाँ छात्र अपनी शिक्षा के बाद या दौरान जुड़ सकते हैं।

***चुनौतियाँ***

छात्र एवं छात्राओं, अभिभावक तथा शिक्षक का अल्प ज्ञान एवं कार्य के प्रति अन्यमनस्कता इनके कार्य में बाधा उत्पन्न करती है।

# विद्या के विशिष्ट व्यक्ति

1. विद्या के वशिष्ट व्यक्तियों का लाभ छात्र एवं छात्राओं को Counselling Classes के द्वारा कराया जा सकता है।
2. ऐसे व्यक्तियों से प्रेरित होकर बच्चे अपना कॅरियर भी decide करते हैं।
3. विद्या के विशिष्ट व्यक्ति समाज में व्याप्त कुरीतियों से भी छात्रों को मार्गदर्शन दे सुरक्षित कर सकते हैं।

## *चुनौतियाँ*

1. समय की कमी के कारण ये अपना योगदान जल्द नहीं दे पाते हैं, सामाजिक कुरीतियों का भी सामना करना पड़ता है। हमेशा सहयोग नहीं मिल पाता है।

### विद्यालय का समुदाय के अन्य व्यक्तियों तथा संगठनों के साथ संबंध

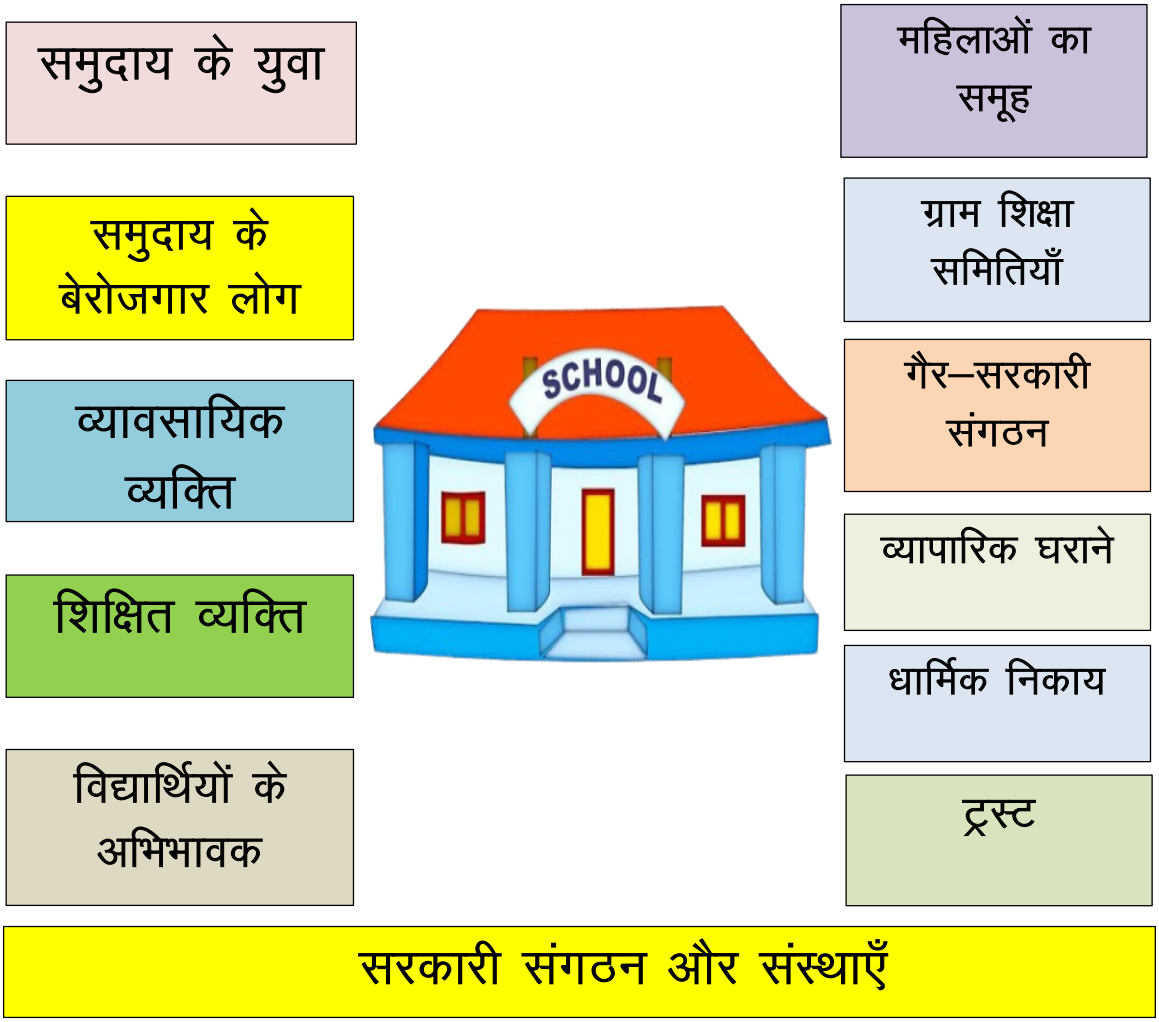


### समुदाय सर्वेक्षण एवं जागरूकता अभियान :–

हर कोई व्यक्ति अपने बच्चों के लिए बेहतर विद्यालय और अच्छी शिक्षा चाहता है। विद्यालय का यह कर्तव्य है कि वहाँ केवल बच्चों को पढ़ाया ही न जाए बल्कि समुदाय के वयस्क व्यक्तियों और अभिभावकों को विद्यालय द्वारा समुदाय को दी जाने वाली सेवाओं के बारे में भी सूचित किया जाए। वर्तमान शिक्षक सहयोगात्मक प्रयास उपलब्ध करने और समुदल के सदस्यों को शैक्षिक संस्थाओं के कार्य के बारे में सूचित करने के प्रति समर्पित है। सहयोगी प्रयास आयोजित करने के लिए, विद्यालय

को समुदाय की, उस समुदाय के लोगों के प्रकार की उनकी आवश्यकताओं और सोच तथा खास तौर से विद्यालय की जानकारी के अभाव के क्षेत्रों, उपलब्ध संसाधनों उनकी शक्तियों और प्रमुख परिसीमाओं तथा मूल्य प्रणाली आदि की जानकारी होनी चाहिए। विद्यालय को उस समुदाय के नेताओं, उनके अनुपालकों, बड़े शक्ति समूहों और वहाँ काम करने वाले संगठनों के बारे में भी जानकारी होनी चाहिए जहाँ वह विद्यालय अवस्थित है।

**समाज में फैली कुप्रथाएँ एवं भ्रांतियों का विरोध** – हमारे भारतीय समाज में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्र में अनेक प्रकार की कुप्रथाएँ फैली हुई है जिसको एक प्राधानाध्यापक एवं शिक्षक विद्यालय में छोटे–छोटे सांस्कृतिक, जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर समाप्त कर सकते है।

**सीमित संसाधन** – विद्यालय में सीमित राशि एवं संसाधन होने के कारण एक कुशल प्रधानाध्यापक, NGOs, समाज के धनाढ्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों से विद्यालय विकास के लिए सहायता राशि ले सकते हैं। विद्यालय का अपना तथा Social Platform में account create करके भी अपने कार्यों को रख Community को जोड़ कर जागरूकता फैला सकते हैं।

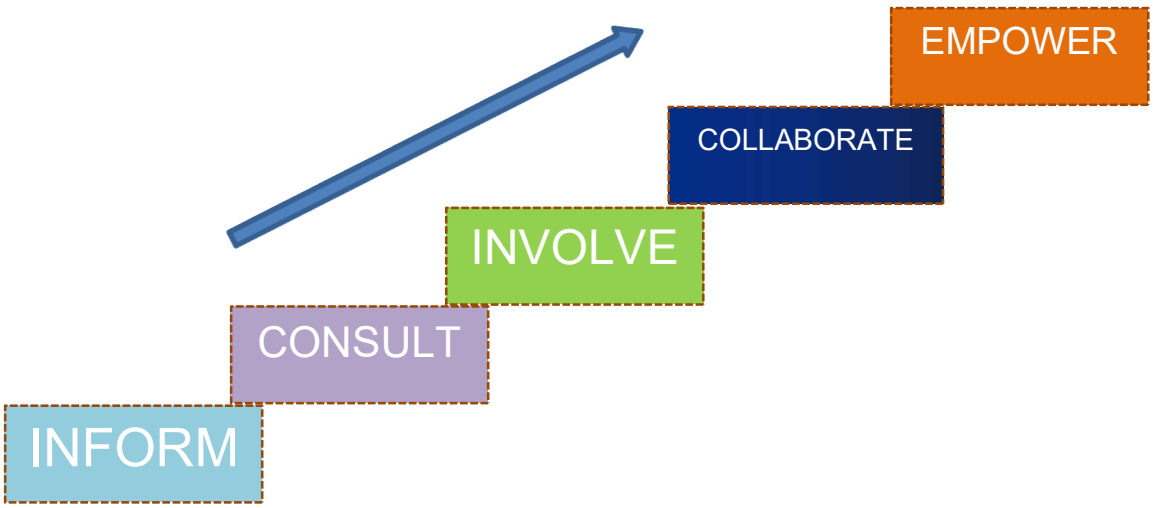

## *Case Study*

उच्च विद्यालय सिंघिया, किशनगंज एक अल्पसंख्यक जिला में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विद्यालय है। इस विद्यालय में 2013 के पूर्व विद्यालय प्रबन्धन समिति एवं अभिभावकों का विद्यालय कार्य में योगदान शून्य के बराबर था, परन्तु शिक्षिका कुमारी गुड्डी ने विद्यालय में पदस्थापन के बाद समुदाय को जोड़ने का प्रयास किया।

खुशबू कुमारी कक्षा नवम की छात्रा है। विद्यालय में काफी बीमार सी दिखती थी परन्तु काफी प्रतिभाशाली थी। लंच के वक्त शिक्षिका द्वारा अभिभावक संपर्क प्रक्रिया शुरू की गई जिसमें खुशबू कुमारी एवं अन्य बच्चियों की माताओं से भी संपर्क किया गया। PTM में अभिभावकों को आने का आग्रह किया गया।

विद्यालय में बच्चियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए Doctors बुला कर Counselling करवाया गया जिसमें Parents को भी बुलाया गया, खुशबू कुमारी की माता भी आई और डाक्टर द्वारा उनकी बच्ची के पोषण एवं संतुलित आहार पर विशेष जोर देने के लिए कहा गया।

इस अभिभावक संपर्क से बच्ची का स्वास्थ्य भी सुधरा तथा अभिभावक विद्यालय से भी जुड़ गए।

PTM के दौरान सरकार द्वारा विद्यालय में चलने वाली विभिन्न योजनाओं का Videos भी दिखाया गया।

# मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. PTM किसे कहते हैं?
2. माता–पिता को स्कूल में क्या भूमिका निभानी चाहिए?
3. अभिभावक से आप क्या समझते हैं?
4. विद्यालय और समुदाय के बीच संबंध स्थापित करने से विद्यालय को क्या फायदा हो सकता है।
5. विद्यालय और शैक्षिक गतिविधियों के लिए ध्यान जुटाने में समुदाय की क्या भूमिका हो सकती है?
6. क्या विद्यालय में अभिभावक प्रतिनिधि बनाया जा सकता है?
7. अभिभावक प्रतिनिधि के क्या कार्य होते हैं?
8. पूर्ववर्ती छात्र विद्यालय विकास में किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?
9. विद्यालय प्रबंधन समिति के क्या कार्य हैं?
10. विद्यालय में ग्राम पंचायत का क्या योगदान होता है?
11. विद्यालय में एक शिक्षक रोल मॉडल के रूप में कैसे स्थापित हो सकता है?
12. समाज के विशिष्ट व्यक्तियों का लाभ विद्यालय में कैसे ले सकते है?
13. गैर सरकारी संगठन का विद्यालय में क्या योगदान हो सकता है ?

———

• कुमारी गुड्डी • आदित्य नाथ ठाकुर

डिजाइन एवं ग्राफिक्स : रवि रौशन कुमार